मृग इव; Mah. 1.2380.: तस्य रेतः प्रचस्कन्द. — *Cum abl.* desilire. Dr. 1.17.8.10.15.: रथात् प्रस्कन्द्य.

स्कन्द *m.* (r. स्कन्द् s. अ) cognomen *Kârtikêyi.* Am.

स्कन्ध *m.* (fortasse a r. स्कन्द् mutato द् in ध्) 1) humerus. 2) truncus. Ur. 68.12. (Anglo-sax. *sculdor, sculder, sculdr*; germ. vet. *scultra, sculdra, scultarra,* mutatis liquidis, v. gr. comp. 20. et Diefenbach *Celtica* 93.; armor. *skoaz*, cambro-brit. *ysgwyz*; fortasse hib. *guala* e *sguada* vel *sguana*; fortasse gr. σπάθη mutatâ gutturali in lab., et lat. *scapula* mutatâ linguali in labialem, sicut in *fumus, inferior, ruber,* v. धूम, अधर, रुधिर.)

स्कन्धदेश *m.* (e praec. et देश regio) *id.* N. 5.28. (*cf.* पुच्छदेश). Dr. 5.8.

स्कन्न v. स्कन्द्.

स्कम्भ् 1. *A.* (scribitur स्कभ्) 5. et 9. *P.* स्कम्भे, स्कभ्नोमि, स्कभ्नामि; *part. pass.* स्कब्ध, *in dial. Vêd.* स्कभित. Fulcire, figere. Rigv. 34.2.: त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे «tria *in eo* adminicula fixa *sunt* ad innitendum». *Cf.* स्कुम्भ्, स्तम्भ्, स्तुम्भ्.

स्कु 5. et 9. *P. A.* tegere. Bhatt. 17.82.: राममम् अस्कुनाद् इषुवृष्टिभिः.

स्कुन्द् 1. *A.* subsilire. *Cf.* स्कन्द्.

स्कुम्भ् 5. et 9. *P.* स्कुभ्नोमि, स्कुभ्नामि *i. q.* स्कम्भ्.

स्खद् 1. *A.* (स्वदने *K.* विदारे *V.*) gustare, lacerare. *Cf.* 1. et 2. खद्.

स्खल् 1. *P.* titubare, vacillare. Hit. 105.15. *TROP.* Hit. 55.2.: प्रभुसमीपम् उपागतानां वाचः स्खलन्ति. Errare, peccare. R. Schl. I. 13.10.: ना 'नाज्ञतम् अभूत् तत्र स्खलितं वा 'पि किञ्चन. (Cf. स्फल्, चल्, lat. *scelus,* nisi hoc pertinet ad कल; gr. σφάλλω; lat. *fallo.*)

c. प्र *i. q. simpl.* A. 8.14.: हयो विमुखाश्चा 'सन् प्रास्खलच्चा 'पि मातलिः.

स्तक् 1. *P.* (प्रतिघाते) contra ferire, arcere, repellere.

1. स्तन् 1. *P.* gemere, suspirare. Bhatt. 14.30.: तस्तनुः क्षताः. (Gr. στένω, lith. *stenu* id., slav. *stenajû* id.)

c. नि *i. q. simpl.* Mah. 3.14060.: तम् उग्रतपसं विप्रन् निष्टनन्तम् महीतले. *Cum acc.* gemere alqd. R. Schl. II. 77.8.: पितुः शरीरनिर्वाणं निष्टनन् विषसाद.

2. स्तन् 10. *P.* स्तनयामि. Tonare. Rigv. 79.2.: स्तनयन्त्य् अभ्राः; 58.2. (Cf. lat. *tono, tonitru*; gr. Στέν-τωρ; sax. vet. *thunar* tonitru, germ. vet. *thonar, donar* id.)

स्तन *m.* mamma. In. 5.8. (Hib. *sine* «a woman's breast, a dug or teat», ejecto *t.*)

स्तनयित्नु *m.* (r. 2. स्तन् suff. *unâd.* इत्नु) 1) nubes. 2) tonitru. Dr. 6.9. 3) fulgur.

स्तब्ध v. स्तम्भ्.

स्तभ् v. स्तम्भ्.

स्तम् 1. et 10. *P.* स्तमामि, स्तमयामि *i. q.* सम्.

स्तम्ब *m.* acervus, cumulus, *e. c. graminis.* R. Schl. II. 80.8.: वीरणास्तम्ब.

स्तम्भ् I. 5. et 9. *P.* स्तभ्नोमि, स्तभ्नामि 1) fulcire. Rigv. 67.3.: तस्तम्भ द्याम् मन्त्रेभिः सत्यैः «fulcivit coelum carminibus efficacibus». — स्तब्ध (v. gr. 83.) immobilis, rigidus. N. 5.25.: विबुधान् ... स्तब्धलोचनान्; Hit. 23.8.: पादान् स्तब्धीकृत्वा. *TROP.* contumax, pertinax. Bh. 18.28. 2) niti, inniti, *c. acc. rei.* A. 6.13.: स तु शब्दो दिवं स्तब्ध्वा प्रतिशब्दम् अजीजनत्. — II. 1. *A.* (scribitur ष्टभ् gr. 109. 110[a].) immobilem fieri. Bhatt. 14.55.: गात्रन् तस्तम्भे (schol. काष्ठवत् निश्चलम् अभूत्). — *Caus.* 1) fulcire. Mah. 3.827.: सोदन्तं सारथिम् ... अस्तम्भयम्. 2) sistere, immobilem reddere, inhibere, obstruere. Mah. 3.10387.: तस्य प्रहरतो बाहुं स्तम्भयामास; 1.207.: ह्रदङ्ग गत्वा स्तम्भयित्वा तदम्भः; R. Schl. I. 75.17.: हुङ्कारेण महादेवः स्तम्भितो ऽथ त्रिलोचनः. (Cf. r. स्तुभ् et *Caus.* r. स्था (स्थापयामि); gr. στείβω, στέμβω; lat. *stupeo, stipes,* nisi pertinent ad स्थापयामि, v. स्था; germ. vet. *stamph* pilum, *stam* stipes, truncus, (dat. *stamma,* ut videtur per assim. e *stamba* vel *stampa,*